

साखी (कबीर) कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : 3
पाठ का नाम : साखी (कबीर)
PPT-3

CHANGING YOUR TOMORROW

**बिरह भुवंगम तन बसै मन्त्र न लागै कोई।
राम बियोगी ना जिवै जिवै तो बौरा होई।।**

भावार्थ : जिस प्रकार अपने प्रेमी से बिछड़े हुए व्यक्ति की पीड़ा किसी मंत्र या दवा से ठीक नहीं हो सकती, ठीक उसी प्रकार, अपने प्रभु से बिछड़ा हुआ कोई भक्त जी नहीं सकता। उसमें प्रभु-भक्ति के अलावा कुछ शेष बचता ही नहीं। अपने प्रभु से बिछड़ अगर वो जीवित रह भी जाते हैं, तो अपने प्रभु की याद में वो पागल हो जाते हैं।

**निंदक नेड़ा राखिये, आँगण कुटी बँधाइ।
बिन साबण पाँणीं बिना, निरमल करै सुभाइ॥**

भावार्थ : प्रस्तुत पाठ कबीर की साखी की इन पंक्तियों में संत कबीर दास जी के अनुसार जो व्यक्ति हमारी निंदा करते हैं, उनसे कभी दूर नहीं भागना चाहिए, बल्कि हमें हमेशा उनके समीप रहना चाहिए। जैसे हम किसी गाय को अपने आँगन में खूँटे से बांधकर रखते हैं, ठीक उसी प्रकार ही हमें निंदा करने वाले व्यक्ति को अपने पास रखने का कोई प्रबंध कर लेना चाहिए। जिससे हम रोज उनसे अपनी बुराईयों के बारे में जान सकें और अपनी गलतियाँ दोबारा दोहराने से बच सकें। इस प्रकार हम बिना साबुन और पानी के ही खुद को निर्मल बना सकते हैं

**पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुवा, पंडित भया न कोइ।
एकै अधिर पीव का, पढ़ै सु पंडित होइ॥**

भावार्थ : प्रस्तुत पाठ कबीर की साखी की इन पंक्तियों में कबीर के अनुसार सिर्फ़ मोटी-मोटी किताबों को पढ़कर किताबी ज्ञान प्राप्त कर लेने से भी कोई पंडित नहीं बन सकता। जबकि ईश्वर-भक्ति का एक अक्षर पढ़ कर भी लोग पंडित बन जाते हैं। अर्थात् किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी होना आवश्यक है, नहीं तो कोई व्यक्ति ज्ञानी नहीं बन सकता।

**हम घर जाल्या आपणाँ, लिया मुराड़ा हाथि।
अब घर जालौं तास का, जे चलै हमारे साथि॥**

भावार्थ : सच्चा ज्ञान प्राप्त करने के लिए, हमें अपनी मोह-माया का त्याग करना होगा। तभी हम सच्चे ज्ञान की प्राप्ति कर सकते हैं। कबीर के अनुसार, उन्होंने खुद ही अपने मोह-माया रूपी घर को ज्ञान रूपी मशाल से जलाया है। अगर कोई उनके साथ भक्ति की राह पर चलना चाहता है, तो कबीर अपनी इस मशाल से उसका घर भी रौशन करेंगे अर्थात् अपने ज्ञान से उसे मोह-माया के बंधन से मुक्त करेंगे।

प्रश्नोत्तर का मौखिक अभ्यास करके आओ ।

THANKING YOU
ODM EDUCATIONAL GROUP